पेज थ्री
www.page3news.in

भाग्य के दरवाजे पर सिर पीटने से बेहतर है कर्मों का तूफान पैदा करें, दरवाजे अपने आप खुल जाएंगे।
– अज्ञात

स्कूल बंद होने का नुकसान

अ०नलाइन क्लासेज की शक्ति और सीमा का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इंटरनेट कनेक्शन देश के 24 फीसदी घरों में ही मौजूद है और उनमें भी ज्यादातर का नेटवर्क समस्याग्रस्त है। स्कूलों में शौचालयों की सीमित संख्या इस जोखिम को काफी बढ़ा देती है।

नवीन शाह।।

बच्चों से जुड़ी संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनिसेफ ने गुरुवार को जारी अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि दुनिया भर में 46 करोड़ 30 लाख बच्चे लॉकडाउन में स्कूल बंद होने के बाद से ही पढ़ाई के दायरे से बाहर हैं। दिलचस्प है कि लॉकडाउन के इकॉनमी पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभावों की चर्चा अक्सर होती है, लेकिन महीनों से जो स्कूल–कॉलेज बंद पड़े हैं, उनमें पढ़ने वाले बच्चों पर पड़ रहे असर को लेकर खास चिंता नहीं दिखती।

ऑनलाइन क्लासेज शुरू करके इनमें कई शैक्षिक संस्थाओं ने यह मान लिया कि उन्होंने अपनी तरफ से पढ़ाई जारी रखी है, मगर यूनिसेफ की ताजा रिपोर्ट इस धारणा के परखचे उड़ा देती है कि बच्चों की पढ़ाई पर लॉकडाउन का कुछ खास असर नहीं पड़ा है।

करीब 100 देशों के हालात का जायजा लेती इस रिपोर्ट के मुताबिक स्कूल बंद होने का नुकसान दुनिया भर में करीब डेढ़ अरब बच्चों को हुआ है। भारत की बात करें तो 15 लाख स्कूल बंद हुए हैं और प्री–प्राइमरी से लेकर सेकंड्री तक के 28 करोड़ 60 लाख बच्चे प्रभावित हुए हैं, जिनमें 49 फीसदी लड़कियां हैं। ऑनलाइन क्लासेज की शक्ति और सीमा का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इंटरनेट कनेक्शन देश के 24 फीसदी घरों में ही मौजूद है और उनमें भी ज्यादातर का नेटवर्क समस्याग्रस्त है।

रिपोर्ट में जल्द से जल्द स्कूल खोलने की जरूरत बताई गई है, लेकिन सच पूछें तो भारत में ऐसा करना अन्य कई देशों के मुकाबले ज्यादा जोखिम भरा है। एक तो यहां क्लासेज बड़ी–बड़ी हैं, हर क्लास में स्टूडेंट्स की संख्या ज्यादा है। दूसरे, इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिहाज से भी स्थिति खराब है। स्कूलों में शौचालयों की सीमित संख्या इस जोखिम को काफी बढ़ा देती है। इसके अलावा हमेशा मास्क लगाने और सुरक्षित दूरी बनाए रखने की उम्मीद भी बच्चों से नहीं की जा सकती। ध्यान रहे, स्कूली छात्रों में प्राइमरी विंग के बच्चों का अनुपात दुनिया के स्तर पर 49 फीसदी है। ऐसे में स्कूल जल्दी खोलना कोई अच्छा विकल्प नहीं है।

दूसरी तरफ ऑनलाइन क्लासेज के नाम पर चल रहे पढ़ाई के दिखावे को आधार बनाकर हम इस नतीजे पर भी नहीं पहुंच सकते कि सारे बच्चों तक शिक्षा की रोशनी पहंच रही है। हमें दुनिया के स्तर पर ऐसी कोई राह निकालनी होगी जिससे पढ़ाई से वंचित रह गए या पीछे छूट गए बच्चों को कोरोना का दौर गुजर जाने के बाद विशेष व्यवस्था के तहत अपना कोर्स पूरा करने का मौका मिले। भले ही गर्मी की छुट्टियों में या अगला सेशन थोड़ी देर से शुरू करके बीच के समय में विशेष क्लास लगानी पड़े, या कोई और तरीका अपनाया जाए, लेकिन इस साल का कोर्स कंप्लीट करने का मौका हर बच्चे को दिया जाना चाहिए।

यह सुनिश्चित नहीं किया गया तो इस अवधि में उनकी पढ़ाई को हुए नुकसान की भरपाई कभी नहीं हो पाएगी और समाज और अर्थव्यवस्था को लंबे समय तक इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

सुंदर लोग

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। कहते हैं कि जो लोग सुंदर नहीं दिखते उनको स्वच्छता, सुगंध और अपने कपड़ों पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन जो सुंदर लोग हैं वे भी इस पर ध्यान देंगे तो उनके लिए तो सोने पर सुहागा वाली बात होगी।

जीवन में सदा खुश या प्रसन्न चित्त रहना जरूरी है। कई ऐसे लोग हैं जो दिनभर उदास रहते हैं और बहुत से हमेशा सबकुछ होने के बाद भी दुखी रहते हैं। खुश रहने के लिए हम जीवनभर प्रयास करते हैं। कुछ चीजों को लेकर हम यह सोचते हैं कि अगर वो मिल जाए तो हमें सच्ची खुशी मिल जाएगी, लेकिन हम इस मामले में गलत साबित होते हैं। कई बार तो हम बेवजह ही बनावटी सुख के लिए अन्य सच्ची खुशियों को नजरअंदाज भी कर देते हैं।

संपादकीय

अवैध निर्माण का जोर

अब 24 अकबर रोड में बहुत सारा बदलाव हो चुका है। हालांकि जो मुख्य भवन है, उससे बहुत ज्यादा छेड़छाड़ नहीं हुई लेकिन अंदर ही अंदर बहुत ज्यादा विस्तार हुआ है। आठ कमरे वाले इस भवन में अब 34 कमरे हो चुके हैं। लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और सीनियर महासचिव के हिस्से में मुख्य बंगला ही है। इसके अलावा कर्मचारियों के लिए आवासीय ब्लॉक बन चुके हैं। हर घर में बिजली, एसी, कूलर, फ्रिज लगा हुआ है। इनमें से ज्यादातर निर्माण अवैध हैं। असल में कांग्रेस जब–जब दिल्ली में सत्तारूढ़ हुई अर्बन और हाउसिंग मिनिस्टर के लिए अपनी वफादारी साबित करने के लिए नियमों की अनदेखी करके 24 अकबर रोड का विस्तार करना एक पैमाना बना।

बूटा सिंह जो कि इंदिरा गांधी की कैबिनेट (1983–84) में वर्क्स और हाउसिंग मिनिस्टर थे और शीला कौल जो कि नरसिम्हा सरकार में हाउसिंग मिनिस्टर थीं, अपने विभाग के दर्जनों अधिकारियों के साथ 24 अकबर रोड आया–जाया करते थे। ये मंत्री विभागीय अधिकारियों के साथ इस बात को लेकर मंत्रणा किया करते थे कि कैसे और ज्यादा कमरे बनवाए जा सकें। अधिकारियों ने नियम के विरुद्ध जाकर अवैध निर्माण की सलाह दी। एक बात जो अहम है, वह यह कि इंदिरा से लेकर सोनिया तक के कार्यकाल में कमरों की संख्या बढ़ाने पर तो जोर दिया जाता रहा लेकिन शौचालयों की संख्या बढ़ाने के बारे में नहीं सोचा गया जिससे कि वहां रहने वालों और आगंतुकों को सहूलियत हो सके।

आपातकाल के बाद का समय इंदिरा गांधी के लिए परीक्षा साबित हो रहा था। न केवल वह अपनी सारी पावर गंवा चुकी थी बल्कि पद जाने के साथ ही उनका सरकारी आवास भी हाथ से निकल गया था।

खाली हाथ थीं इंदिरा

रशीद किदवई।।

साल 1978 में जनवरी महीने की कड़ाके की ठंड वाली सुबह थी। शोभन सिंह और विभाजित कांग्रेस के 20 कर्मचारी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में सबसे पहले 24 अकबर रोड में दाखिल हुए। दिल्ली के लुटियंस में टाइप सात का यह बंगला आंध्रप्रदेश से राज्यसभा सदस्य जे वेंकटस्वामी के नाम था। वेंकटस्वामी उन चंद नेताओं में थे जिन्होंने तब इंदिरा गांधी से जुड़े रहने का फैसला किया था। उस समय ज्यादातर कांग्रेस नेताओं ने इस डर से इंदिरा गांधी से दूरी बना ली थी कि उनसे निकटता जनता पार्टी सरकार को प्रतिशोधपूर्ण कार्रवाई के लिए आमंत्रित करेगी।

आपातकाल के बाद का समय इंदिरा गांधी के लिए परीक्षा साबित हो रहा था। न केवल वह अपनी सारी पावर गंवा चुकी थी बल्कि पद जाने के साथ ही उनका सरकारी आवास भी हाथ से निकल गया था। उनका महरौली स्थित फार्म हाउस भी अभी अधबना ही था और बहुत तेजी के साथ उनके दोस्त भी साथ छोड़ रहे थे, जिनमें विश्वसनीय दोस्त भी शामिल थे। जब इंदिरा गांधी की दिक्कतें और बढ़ीं तो उनके पुराने वफादार मोहम्मद युनूस ने अपना 12 विलिंगडन क्रीसेंट आवास उनके परिवार को

रहने के लिए दिया और खुद दक्षिण दिल्ली स्थित अपने निजी आवास में चले गए। इस तरह 12 विलिंगडन क्रीसेंट गांधी परिवार का नया ठिकाना बना। इंदिरा गांधी वहां राजीव गांधी, सोनिया गांधी, बच्चे राहुल और प्रियंका, संजय गांधी, मेनका गांधी और पांच पालतू कुत्ते के साथ आईं लेकिन इस घर में इतनी जगह नहीं थी कि यहां से किसी तरह की राजनीतिक गतिविधियां चलाई जा सकें। इसलिए 24 अकबर रोड को कांग्रेस का नया हेडक्वॉर्टर बनाया गया जो कि अगले चार दशक बहुत भाग्यशाली साबित हुआ। इस भवन का एक फायदा यह भी था कि इसका एक दरवाजा 10 जनपथ को जोड़ता था, जो उस समय यूथ कांग्रेस का दफ्तर हुआ करता था और आज सोनिया गांधी का आवास है।

जब 1980 में इंदिरा गांधी विशाल बहुमत के साथ में सत्ता में लौटीं तो उन्होंने 7, जंतर मंतर रोड पर दोबारा दावा नहीं किया, हालांकि उनके पुत्र संजय गांधी ऐसा चाहते थे। उन्होंने संजय गांधी से कहा कि पार्टी को एक बार नहीं बल्कि दो बार शून्य से बनाया है। वह फिर ऐसा करेंगी। वह इस नए कार्यालय को इस तरह से तैयार करेंगी, जो दशकों तक कार्यकर्ताओं के काम आएगा। 1978 में पार्टी विभाजन के बाद इंदिरा कांग्रेस के पास कुछ भी नहीं बचा था।

उस समय के कार्यालय सचिव सादिक अली ने पार्टी से जुड़े तमाम दस्तावेज, यहां तक कि किताबें भी इंदिरा गांधी को सौंपने से इनकार कर दिया था। बूटा सिंह, एआर अंतुले और दूसरे नेता जब 24 अकबर रोड में दाखिल हुए तो वे खाली हाथ थे लेकिन इंदिरा गांधी की भविष्यवाणी सच साबित हुई। 24 अकबर रोड कांग्रेस के लिए नई जिंदगी साबित हुआ। जिस तरह मुगल सम्राट अकबर, जिसके नाम पर यह रोड है, शुरुआत में लड़खड़ाए थे लेकिन बाद में उन्होंने अपने को स्थापित किया, उसी तरह कांग्रेस ने भी यहां से शुरुआती मुश्किलों के बाद खुद को स्थापित किया। 24 अकबर रोड में दाखिल होने के बाद शोभन सिंह और दूसरे कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पार्टी पदाधिकारियों दृ अध्यक्ष इंदिरा गांधी, महासचिव–एआर अंतुले, बूटा सिंह, एपी सिंह, बीपी मौर्या और कोषाध्यक्ष प्रणब मुखर्जी के लिए अलग–अलग कक्ष व्यवस्थित करने का काम शुरू किया।

सूडोकू नवताल-5460

✱✲✲✲✲ सरल

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

Jagrutidaur.com, Bangalore

सूडोकू नवताल -5459 का हल

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

अपना ब्लॉग

आधी आबादी की नौकरियां खा रहा कोरोना

मोहन। हेल्प फॉर यू एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जो इन घरेलू सहायक–सहायिकाओं को उनके नियोक्ताओं से जोड़ता है। इसके प्रवक्ताओं का कहना है कि बड़ी संख्या में मेड्स की नौकरियां चली गई हैं। बहुत सी महिलाएं शिकायत कर रही हैं कि उन्हें लॉकडाउन की तनख्वाह भी नहीं दी गई। वे कह रही हैं कि क्या खाएं, बच्चों को क्या खिलाएं, उनकी फीस और मकान का किराया कहां से दें? कोविड–19 के लिए जो हेल्पलाइंस बनी हैं, उन पर दिन में कम से कम दस–पंद्रह फोन इन्हीं लोगों के आते हैं, जो मदद की गुहार लगाते हैं। बहुत से सोसाइटी परिसरों में इन्हें अंदर भी नहीं आने दिया जा रहा है, क्योंकि लॉकडाउन भले ही खुल गया हो, मगर कोरोना अभी यहीं है। आज आप जिस संस्थान में काम कर रहे हैं, 'आजादी' से जिस स्तर तक के फैसले ले पा रहे हैं, उस 'आजादी' के लिए किसने हजार गलतियां करने के बाद भी अपने समय की 'शहादत' देकर, आपको लगातार सिखाया।